पाठ –तताँरा वामीरो कथा

लेखक लीलाधर मंडलोई

कार निकोबार लिटिल अन्दमान से ९६ कि.मी. दूर है।

विश्वास है कि लिटिल अन्दमान और कार निकोबार द्वीप एक ही थे। इनके विभक्त होने की लोककथा है---

अंडमान एवं
निकोबार
लक्षद्वीप

प्रस्तुत पाठ `तताँरा-वामीरो कथा' इसी द्वीपसमूह के एक छोटे-से द्वीप पर केन्द्रित है। उक्त द्वीप में विद्वेष गहरी जड़ें जमा चुका था। उस विद्वेष को जड़-मूल से उखाड़ने के लिए एक युगल को आत्मबलिदान देना पड़ा था। उसी युगल के बलिदान की कथा यहाँ बयान की गई है।

प्रेम सबको जोड़ता है और घृणा दूरी बढ़ाती है। इसीलिए जो समाज के लिये अपने प्रेम का, अपने जीवन तक का बलिदानकरता है, उसे न केवल समाज याद रखता है; बल्कि उसके बलिदान को व्यर्थ नहीं जाने देता। यही वजह है कि तत्कालीन समाज के सामने एक मिसाल कायम करने वाले इस युगल को आज भी उस द्वीप के निवासी गर्व और श्रद्धा के साथ याद करते हैं।

सदियों पूर्व लिटिल अन्दमान और कार निकोबार एक थे।वहाँ एक सुन्दर गाँव बसा हुआ था। उस गाँव में तताँरा नाम का एक सुन्दर युवक रहता था।

ततॉंरा की विशेषताएं

- जन सेवी
- शांत
- नेक
- मददगार
- त्यागमयी
- सुन्दर
- पारम्परिक वेशभूषा
- आकर्षक व्यक्तित्व
- विनम्र
- लकड़ी की दैवीय शक्ति वाली तलवार

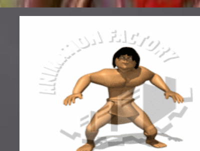

एक शाम तताँरा थका-हारा समुद्र के किनारे बैठा था। सूरज डूबने को था,ठंडी हवा बह रही थी,पक्षियों की चहचहाहट सुनाई दे रही थी। तभी उसे लहरों की आवाज के बीच एक मधुर गीत सुनाई पड़ा।वह मंत्रमुग्ध होकर आवाज की तरफ़ बढ़ा। उसने देखा कि एक युवती अपने गीत में खोई हुई है। वह खड़ा होकर सुनने लगा।अचानक लहरों ने उसे भीगा दिया और उसका गाना बंद हो गया।

तताँरा- तुमने गाना क्यों बंद कर दिया?
वामीरो- पहले ये बताओ, तुम कौन हो?
तताँरा- तुमने इतना मधुर गाना अधूरा क्यों छोड़ दिया?
वामीरो- अजीब आदमी हो, एक ही राग अलाप रहे हो।मैं गाऊँ न गाऊँ ,मेरी मर्जी। तुम कौन हो? शायद तुम्हे गाँव के नियम नहीं मालूम?

{यह कहकर वामीरो जाने लगी तो तताँरा ने रास्ता रोक लिया।}

तताँरा- नाम बताओ,रास्ता छोड़ दूँगा।
वामीरो- वा---मी-----रो-----
तताँरा- कल आओगी?
वामीरो- नहीं, शायद कभी नहीं । {जाने लगी।}
तताँरा- वामीरो------मेरा नाम तताँरा है---कल मैं यहीं तुम्हारी बाट जोहूँगा; जरूर आना।

{ वामीरो चली गई}

कितना सुन्दर और शक्तिशाली है,तताँरा!
पर….गाँव का नियम है कि दूसरे गाँव के युवक के साथ शादी नहीं कर सकते। हाँ उसे भूल जाना ही अच्छा है।

अहा! कितनी सुन्दर है,वामीरो! कितना मधुर गाती है! हाय! कब शाम होगी…कब मैं उससे मिलने जाऊँगा!

दोनों एक -दूसरे से मिलने को आतुर

दोनों एक-दूसरे को घंटों केवल देखते रहे।

वामीरो चली गई

इसके बाद तताँरा के जीवन में परिवर्तन आ गया। वह दिन-रात वामीरो के विषय में ही सोचने लगा ; उससे मिलने को तड़पने लगा। उधर वामीरो का भी ऐसा ही हाल था। दोनों रोज समुद्र के किनारे मिलने लगे।

लोगों को उनका मिलना-जुलना अच्छा न लगा। लोगों ने तताँरा और वामीरो को गाँव के नियम. कानून समझाए और उनको मिलने.जुलने से मना किया

एक बार तताँरा के गाँव लपाती में पशु पर्व का आयोजन किया गया।**तताँरा ने वामीरो को ढूँढ लिया। वामीरो रो रही थी। तताँरा उसे दिलासा देने लगा। तभी वामीरो की माँ वहाँ आ पहुँची और उसने तताँरा को बहुत बुरा-भला कहा। गाँव के लोगों ने भी उन्हें खूब डाँटा – फ़टकारा । तताँरा को यह सब अपमानजनक लगा । क्रोध में आकर उसने तलवार निकाल ली।**

ततााँरा गााँव वालों पर तलवार नहीं उठाना चाहता था ।अपने क्रोध का शमन करने के लिए उसने पूरी शक्ति से तलवार को धरती में घोंप दिया और ताकत से खींचने लगा। धरती के दो टुकड़े हो गए..

एक टुकड़े पर ततााँरा…और दूसरे टुकड़े पर वामीरो और गााँव वाले…….

दोनों द्वीप अलग होकर दूर होते चले गए।

ततााँरा चिल्ला रहा था---*वामीरो*……

वामीरो चिल्ला रही थी---*ततााँरा*……

बहता हुआ वह द्वीप- खण्ड बहुत दूर चला गया........ तताँरा डूबता – उतराता बहुत दूर चला गया।
वामीरो और गाँव के लोग उसे ढूँढते रहे ,पर उसका कुछ पता न चला
तताँरा के गम में वामीरो पागल हो गई।उसने खाना-पीना छोड़ दिया,परिवार से वह एक तरह अलग हो गई |तताँरा को ढूँढते हुए वह भी एक दिन कहीं चली गई।उसका भी कुछ पता नहीं चला।

आज न ततॉंरा है न वामीरो किन्तु उनकी यह प्रेमकथा घर-घर में सुनाई जाती है।निकोबारियों का मत है कि ततॉंरा की तलवार से कार-निकोबार के जो टुकड़े हुए,उसमें दूसरा लिटिल अन्दमान है जो कार-निकोबार से आज ९६ कि.मी. दूर स्थित है।निकोबारी इस घटना के बाद दूसरे गाँवों में भी वैवाहिक संबंध करने लगे ।ततॉंरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु शायद इसी सुखद परिवर्तन के लिए थी।